

selbständige praep. aufgefasset werden. अभिकुद्ध in Zorn gerathen. erzürnt MBu. 3, 426. 14984. 16, 87. Buig. P. 4, 19, 16.

— समभि, davon समभिकुद्ध erzürnt MBu. 3, 8738. 14, 172.

— परि in Zorn gerathen R. ed. Çala. 2, (3 nach Bopp) 76, 45. West.

— प्रति Jmd (acc.) widerszürnen: कुध्यते न प्रतिकुध्येत् M. 6, 48. MBu. 3, 1073.

— सम् zürnen: धर्मराजो न संकुध्येत् MBu. 3, 14828. mit dem acc. der Person: संकुध्यसि नृपा किं त्वं दिदृक्षु माम् BHATT. 8, 76 (der Schol. verweist auf P. 4, 4, 38). संकुद्ध aufgebracht, erzürnt MBu. 1, 5965. 3, 314. BENF. Chr. 33, 36. 39, 4. 61, 46. LA. 48, 1. R. 1, 33, 6. 38, 8. 3, 7, 9. 34, 15. 4, 9, 74. 12, 24. PAKĀT. I, 318. 232, 12 (अतिसं०). Buig. P. 4, 19, 13. 6, 11, 3. संकुद्धो रातस्तस्याः MBu. 1, 5977.

— अभिसम् auf Jmd (acc.) zürnen: ये यमेयो ऽभिसंकुद्धः MBu. 4, 1572. मामभिसंकुध्यन् BHATT. 20, 27. अभिसंकुद्ध erzürnt auf (gen.): अन्योऽन्यस्याभिसंकुद्धाचन्योऽन्यं वदतुः शरीः MBu. 3, 682.

— प्रतिसम् auf Jmd (acc.) zürnen: भगिनो प्रतिसंकुद्धम् (प्रति सं०?) MBu. 1, 5983. ohne Ergänzung: तमेवं प्रतिसंकुद्धं वृषाणं राघवं रणे R. 3, 33, 71.

2. कुष् f. Zorn AK. 1, 1, 2, 26. 3, 4, 24, 155. H. 299. कुधा im Zorn Vid. 214. अतिकुधा (könnte auch der nom. f. eines adj. sein) KATHA. 1, 56.

कुधा (von कुष्) f. dass. BHAR. zu AK. 1, 1, 2, 26 im ÇKDra. H. 299.

कुर्मिन् wie eben: adj. reizbar: प्रुषो वः प्रुष्यः क्रुध्मी मर्नासि RV. 7, 56, 8.

कुन्, कुयति v. l. für कुन्, कुयति DĀRUP. 31, 42.

कुम् f. N. pr. eines Zuflusses des Indus: मा वै रसानिन्ना कुना कुम्-र्मा वः सिन्धुर्नि रोरनत् RV. 5, 33, 9. त्वं सिन्धो कुम्भे गोमती कुम्भे कृत्वा सर्वं याभिरिषसे 10, 73, 6.

कुम्भं m. Spahn zum Auffangen des Feuers, wenn dieses aus den Reibhölzern hervorbricht: यस्माद्गोरोरुदयेत् । तत्पारणी कुम्भम् । कुम्भमपि कुर्यात् । दृषा वा धृमेः प्रिया तून् । यत्कुम्भः TBu. 1, 4, 2, 3. अग्निदेवेन्यो निंलायत् स कुम्भं प्राविशत्कुम्भमवदधाति TS. 5, 1, 9, 5. — Vgl. कुम्भः कुम्भः.

कुम्, क्रोशति (ausnahmsweise auch med.); क्रोहति, क्रोष्ट (Kār. 5 in der Siddh. K. zu P. 7, 2, 10); अक्रुत्तत्; schreien, kreischen, wehklagen DĀRUP. 20, 26. Nir. 2, 25. वर्त्तमानायां सायमक्रुत्तदिति मन्यते RV. 10, 146, 4. वृद्धदत्ति मदिरेण मन्दिनेन्द्र क्रोशति ऽविद्वन्ना मधु 94, 4. प्रति-घ्नानामुमुखो कृध्वाणी च क्रोशतु AV. 14, 9, 7. 10, 7. von Vögeln SUCR. 2, 246, 5. एष क्रोशति दात्यूस्तं शिखी प्रतिक्रुजति R. 2, 36, 9. चुक्रोश ऋ-यप्रोङ्गति सर्वतः प्रविलोकयन् 1, 9, 59. चुक्रोश परमार्तः 42, 13. 2, 20, 6. 3, 30, 22. MBu. 1, 4960. BHATT. 14, 31. मुक्रुः क्रोशति रोदिति N. 11, 14. रुदती च क्रोशती R. 1, 34, 7. M. 3, 33. MBu. 3, 16415. 13, 7262. R. 2, 10, 37. 3, 30, 24. 31, 2. BHART. 3, 22. BHATT. 6, 124. क्रोशमान R. 1, 60, 19. 3. 66, 17. klingen, vom Ohr: भद्राय कर्णः क्रोशतु KAUC. 38. — क्रुष्ट 1) der Jmd (acc.) anschreit, schimpft (vgl. u. — आ): अथ यो ब्राह्मणान्क्रुष्टः पराभवति सो ऽचिरात् (man hätte eher erwartet: ब्राह्मणाक्रुष्टः der von Brahmanen angeschrien wird, da es im Vorhergehenden heisst: ब्राह्मणा ये प्रशंसन्ति स मनुष्यः प्रवर्धते) MBu. 13, 2135. — 2) angeschrien, geschmähet: अनुप-

H. Theil.

हत्क्रुष्टः BUAN. Lot. de la b. l. 603. — 3) n. Geschrei, Geheul AK. 1, 1, 2, 35. H. 1402. MED. f. 6. — intens. चोक्रुशति P. 7, 4, 82, Sch.

— अति. अतिक्रुष्ट zweifelhafte Lesart VS. 30, 5.

— अनु anschreien: उत स्मै वस्त्रमयि न तानुमुं क्रोशति तिनयो भोर्यु RV. 4, 38, 5. — caus. Jmd nachschreien. Mitgefühl an den Tag legen: किमुक्रोशय वैपत्यमुत्पादयसि मे MBu. 13, 285. — Vgl. अनुक्रोश.

— अथ s. अथक्रोश.

— अग्नि 1) anschreien, zurufen, scheltend oder zürnend anrufen: तं भूतान्यन्यक्रोशन्त्रक्षादिति TS. 2, 5, 4, 2. निनदत्तमभिक्रोशन् शार्दूल इव वारणम् MBu. 4, 359. अन्योऽन्यमभिक्रुष्टः 3, 11363. पुनः पुनरभिक्रोशन्-भियाकृति MBu. in BENF. Chr. 27, 10. von dem den Feinden zürnenden Ton der Trommel AV. 5, 21, 9. — 2) bewehklagen: ततो बालिनमुग्रम्य सुयीवः शिविका तदा । आरोपयदभिक्रोशन्वद्वेन सक् प्रनुः ॥ R. 4, 24, 22. — Vgl. अभिक्रोशक.

— अथ auf Jmd herabschreien: अथक्रुष्टः कोकिलया = अथकोकिलः P. 2, 2, 18. VART. 6, Sch.

— आ 1) hinschreien, laut ausrufen: अये गौरिनाथ त्रिपुरहर शमो त्रि-नयन प्रसोदित्यक्रोशन् BHART. 3, 87. आक्रुष्ट n. lautes Geschrei SUCR. 1, 108, 17. — 2) anschreien, anschmauzen, anfahren, schimpfen, schmähen, seinen Unmuth gegen Jmd an den Tag legen: अन्यः क्रोशति प्रान्यः शंसति TS. 7, 5, 9, 3. KĀTJ. Çu. 13, 3, 5. अन्योऽन्यमाक्रोशतः 6. ÇAT. Br. 11. 4, 2, 19. यथाभिप्रेतमितरा ब्रह्मचार्यक्रोशत् LĀTJ. 4, 3, 16. तान् हिंस्यान् चक्रोशत् R. 4, 17, 27. पतिमाचक्रुष्टः 2, 20, 6. DAÇAK. in BENF. Chr. 191, 22. नाथेनाक्रोशति MĀKĀ. 115, 6. शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य तत्रियो दृष्टमर्क-ति M. 8, 267. R. 3, 31, 30. MĀK. P. 13, 3. तं भीतकारमाक्रुश्य BHATT. 5, 39. तं तु मां जीवलोको ऽयं नूनमाक्रोष्टमर्कति R. 2, 12, 77. आक्रुश्यमानो नाक्रोशत् MBu. 1, 3557. आक्रुष्ट der geschmähet wird (वर्तमाने) Kār. zu P. 3, 2, 188. आक्रुष्टः कुशलं वदेत् M. 6, 48. MBu. 3, 1091. 13, 4562. — Vgl. आक्रोश fg.

— अभ्या anschmauzen, schmähen: तं सर्वाणि भूतान्यभ्याक्रोशन् ÇĀKĀ. Çr. 14, 30, 2. 31, 1.

— प्रत्या wiederanschreien, wiederschmähen: प्रत्याक्रोशोदिराक्रुष्टः MBu. 13, 4562. आक्रुष्टः पुरुषः सर्वं प्रत्याक्रोशेदन्तरम् 3, 1091.

— व्या laut ausrufen, wehklagen: का प्रिये व्वासि नष्टासि व्याक्रोश-व्यपतत्तितौ R. 3, 68, 22. — Vgl. व्याक्रोशक.

— समा schmähen: लोकसमाक्रुष्टः R. 2, 100, 16.

— उद् 1) aufschreien: उदक्रोशन्परित्रस्ताः MBu. 3, 16415. तत उच्च-क्रुष्टुर्दृष्टाः R. 6, 36, 60. MBu. 1, 3145. 7035. 3, 852. 14904. 4, 1949. AR. 7, 2. MBu. in BENF. Chr. 33, 10. अथोत्क्रुष्टं तदा कृष्टैः सर्वैर्देवैर्हृदागुधैः MBu. 3, 14591. R. 3, 64, 9. ततश्च सर्वहृत्क्रुष्टम् — प्रसादं कुरु भूपति MĀK. P. 13, 47. 21, 80. मुनिशिष्यैर्योत्क्रुष्टे als die Schüler aufschrien 5. neutr. das Aufschreien MBu. 14, 1760. SUND. 1, 33. R. 4, 44, 106. 5, 10, 3. — 2) zuschreien, zurufen, mit dem acc. der Person: उदक्रोशत्स पाण्डवान् ॥ द्रिपते गोधनम् MBu. 1, 7748. सूतानुच्चक्रुष्टः केचिद्ब्रान्योऽन्यतेति च 7948. — Vgl. उत्क्रोश.

— अयुद् durch lauten Zuruf ermuntern: न वा अयुत्क्रुष्ट इन्द्रो वीर्यं कर्तुमर्हत्यभ्येनमुत्क्रोशामेति At. Br. 8, 12.

— प्रोद्, प्रोत्क्रुष्ट n. ein lautes Aufschreien HARIV. 13816.